हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

1 जनवरी, 1975

खंड 1, अंक 1

अधिकृत विवरण

विशय सूची

बुधवार, 1 जनवरी, 1975

पृश्ठ संख्या

सदन की मेज पर रखा गया राज्यपाल का अभिभाशण	(1)1
अध्यक्ष द्वारा घोशणाः–	
1. सभापतियों की तालिका	(1)10
2. याचिका समिति	(1)10
सचिव द्वारा घोशणा	(1)10
भाोक प्रस्ताव	(1)11
नियम 30 के अधीन प्रस्ताव	(1)14
सदन के मेज पर रखे जाने वाले कागज–पत्र	(1)16
सदन के मेज पर पुनः रखे जाने वाले कागज–पत्र	(1)16

हरियाणा विधान सभा

बुधवार, 1 जनवरी, 1975

विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा, विधान भवन, सैक्टर–1, चंडीगढ़ मे 1मध्यान्होपरान्त 15.12 बजे हुई। अध्यक्ष (चौधरी सरूप सिंह) ने अध्यक्षता की।

राज्यपाल का अभिभाशण

(सदन की मेज पर रखी गई प्रति)

Mr. Speaker: In pursuance of Rule 18 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Haryana Legislative Assembly, I have to report that the Governor was pleased to address the Haryana Legislative Assembly on the 1st January, 1975, at 2.00 P.M. under Article 176(1) of the Constitution.

A copy of the Address is laid on the Table of the House.

मित्रो,

हरियाणा विधान सभा के इस वर्श के प्रथम सत्र के लिए मैं एक बार फिर बड़े हर्श के साथ आपका स्वागत करता हूं

और उस महत्वपूर्ण कार्य की, जिसे आप आरम्भ करने वाले है, सफलता की कामना करता हूं।

जैसा कि आप को विदित ही है कि दे ा अभूतपूर्व क्रमिक वर्द्धमान मुद्रास्फीति की कठिन आर्थिक परिस्थिति से गुजर रहा है, जिसके कारण आयोजना तथा द्रुत विकास के समस्त राश्ट्रीय प्रयास में गतिरोध पैदा हो गया है। यह वि वव्यापी समस्या का अंग है। हरियाणा पर भी इसका प्रभाव पड़ा है किन्तु अनेक कठिनाईयों के बावजूद राज्य सरकार आर्थिक न्याय तथा सामाजिक समता के सिद्धान्तों पर आधारित लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना हेतु अपने प्राथमिक उद्दे य की पूर्ति की दि ाा में आगे बढ़ी है। व्यवस्था, संचार व्यवस्था, चिकित्सा उपचार, ि ाक्ष, गृह–निर्माण तथा रोजगार और अनुसूचित जातियों तथा पिछड़ी श्रेणियों के कल्याण को प्राथमिकता दी गई है।

भात प्रति ात ग्रामीण वैद्युतीकरण की महत्वपूर्ण उपलब्धि के सम्बन्ध में आप सब लोग भली–भांति परिचित हैं। इस उपलब्धि के फलस्वरूप नलकूपों को बहुत ही तेज गति से बिजली दी जानी सम्भव हो सकी। इस समय नलकूपों की संख्या 1.33 लाख हो गई है, जबकि मई, 1968 में इनकी संख्या 29000 थी। वर्श के दौरान राज्य ने निःसन्देह बिजली के बहुत बड़े संकट का सामना किया है जिसका मुख्य कारण 1973–74 में कम वर्शा होना और बाद में सतलुज नदी के जलग्रह क्षेत्रों में मानसून का न आना था। बिजली की इस कमी के बावजूद बिजली देने के विशय में

कृशि क्षेत्र को सबसे अधिक प्राथमिकता दी गई और खरीफ, 1974 के दौरान 20 करोड़ यूनिट बिजली दी गई, जबकि खरीफ, 1973 के दौरान 19 करोड़ यूनिट बिजली दी गई थी। इस वर्श रबी की बुवाई के लिए नलकूपों को प्राथमिकता से बिजली दिए जाने के लिए कदम उठाए गए। हमारे सामने विभिन्न कठिनाइयों के होते हुए भी इस नीति को जारी रखा जाएगा। भाखड़ा–नंगल प्रणाली द्वारा बिजली के उत्पादन में कटौती से राज्य को बहुत बड़ा आघात पहुंचा है और नलकूपों को बिजली की सप्लाई जारी रखने के लिए अन्य क्षेत्रों वि ोशतः औद्योगिक क्षेत्र में बिजली की खपत पर प्रतिबन्ध लगाने पड़े। सरकार को राज्य में सूचे तौर पर बिजली की वर्तमान कमी का ज्ञान है किन्तु बिजली के अतिरिक्त उत्पादन को अधिक से अधिक मात्रा में बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयत्न किए जा रहे हैं। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए फरीदाबाद में 60 मैगावाट का एक ताप बिजलीघर पहले ही चला दिया गया है ओर एक ऐसा ही बिजली घर कुछ महीने प चात् भुरू कर दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त, पानीपत में प्रत्येक 110 मैगावाट के दो बिजली घरों के निर्माण को मुकमिल करने के प्रयत्न किए जा रहे है। यह भी आ ाा की जाती है कि राज्य लगभग 1976 के दौरान ब्यास से बिजली का अपना हिस्सा प्राप्त करने लगेगा। अतः वर्तमान बिजली संकट बहुत सीमा तक 1977–78 के अन्त तक समाप्त हो जाना चाहिए।

अर्थ–व्यवस्था की संतुलित वृद्धि सुनि चित करने के लिए राज्य के भाुश्क और वर्शा की कमी की प्रवृति वाले क्षेत्रों की ओर वि ोश ध्यान दिया गया है। इन क्षेत्रों के किसान, राज्य के अन्य भागों के लोगों की तुलना में सामाजिक तथा आर्थिक दृश्टि से पिछड़े हुए थे। उनकी द ाा सुधारने के विचार से सरकार ने उठान सिंचाई स्कीमें बनाई और उन्हें अत्यन्त भाीघ्रता से निश्पादित किया। जुई उठान सिंचाई स्कीम को समाप्त हुए पर्याप्त समय हो गया है, जबकि इंदिरा गांधी उठान सिंचाई और बीरेन्द्र नारायण चक्रवर्ती उठान सिंचाई स्कीम के एक भाग पर निर्माण कार्य भी प्रारम्भ किया जा चुका है ओर इस स्कीम पर 1974–75 के दौरान 1.5 करोड़ रूपए खर्च होने की आ ाा है। पांचवी पंच–वर्शीय योजना के दौरान इस स्कीम पर 35 करोड़ रूपए खर्च करने का प्रस्ताव है। जब ये उठान सिंचाई स्कीमें पूर्ण हो जाएंगी तब इन से सूखाग्रस्त क्षेत्र के कुल 13.67 लाख एकड़ रकबे और 10.84 लाख एकड़ के का त योग्य सिंचित रकबे को लाभा होगा। अन्य सिंचाई स्कीमों में आवर्धन नहर परियोजना सग्मिलित है जिसे सफलापूर्वक निश्पादित किया गया है। इसके परिणामस्वरूप 1968 से सिंचाई के लिए 3125 क्यूसिक अतिरिक्त जल की वृद्धि हुई है। जल स्त्रोंतो के संरक्षण की दि ाा में उठायसा गया एक अन्य मुख्य कदम यह है कि हरियाणा राज्य लघु सिंचाई निगम (नलकूप) द्वारा जलमार्गों को पक्का करने का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया गया है। मार्च, 1975 तक 1800 किलोमीटर की लम्बाई के 600 जलमार्गों को पक्का करने का प्रस्ताव है। इस कार्य के लिए

सांस्थानिक स्त्रोंतो के माध्यम से निधियां प्राप्त की जा रही हैं और इसकी लागत लाभ प्राप्त करने वालों से आसान कि तों में वसूल की जाएगी। अतः सिंचाई नीति के अन्तर्गत एक ओर तो सिंचाई सुविधाओं का विस्तार किया जाना है और दूसरी ओर जल स्त्रोंतो का संरक्षण करना है, जिससे आ ाा है कि भविश्य में मानसून पर निर्भर करना इतना आव यक नहीं होगा। सिंचाई सुविधाओं में वृद्धि करने की योजनाओं के अतिरिक्त जो कि अनिवार्य रूप से सूखे की रोकथाम के लिए दीर्घावधि उपाय है, एक आपात् सूखा राहत योजना तैयार की गई। राहत के लिए 5 करोड़ रूपए के खर्च वाली अनेक स्कीमों संस्वीकृत की गई थी। इन स्कीमों में बीजों के लिए नकद तकावी, चारे के लिए जिस के रूप में तकावी, बैल और कृशि–उपकरण, लोगों को लाभदायक रोजगार जुटाने के लिए सड़क निर्माण कार्य तथा सिंचाई विभाग के निर्माण कार्यों की स्कीमें सम्मिलित हैं।

सरकार इस तथ्य की ओर असावधान नहीं है कि हमें अधिक खाद्यान्न का उत्पादन करना चाहिए, जिससे दे ा समूचे तौर पर लाभान्वित हो सके। दे ा खद्यान्नों की खरीद के लिए कीमती विदे ाी मुद्रा का अपव्यय नहीं कर सकता। समय की मांग है कि कृशि उत्पादन को अधिक से अधिक बढ़ाया जाए। यह अत्यन्त सन्तोशजनक बात है कि राज्य सरकार ने अपनी स्कीमों में कृशि उत्पादन को सबसे अधिक प्राथमिकता दी है। विभिन्न सिंचाई–स्कीमें, जिनका अभी–अभी उल्लेख किया गया है, अधिक

कृशि उत्पादन प्राप्त करने के लिए निश्पादित की जा रही है। अधिक उपज देने वाले बीजों की किस्मों को लोकप्रिय बनाया गया है, जिसके परिणामस्वरूप खाद्यान्नों की प्रति हैक्टेयर औसत उपज 1968–69 की 893 किलोग्राम से बढ़कर 1973–74 में 1539 किलोग्राम हो गई है। 71 प्रति ात की इस वृद्धि से यह पता चलता है कि हरियाणा के किसान प्रगति ील हैं और वे हर प्रकार से नए उत्पादन तकनीक अपना रहे है। गन्ना, कपास और तिलहन जैसी नकदी फसलों के उत्पादन की ओर भी राज्य सरकार ने वि ोश ध्यान दिया है। जिला हिसार में लम्बे रे ो वाली कपास के विाकस का वि ो ा उललेख परमाव यक हैं। हरियाणा कृशि वि वविद्यालय और अन्य अनुसन्धान संस्थाओं की सहायता से विभिन्न उन्नत किस्मों के मूल बीजों की व्यवस्था हरियाणा बीज विकास निगम द्वारा की जा रही है। निगम मूल बीजों के उत्पादन में राज्य की आत्मनिर्भर बनाने के लिए अपने फार्म की स्थापना भी करेगा। आगामी वर्श के दौरान पन्द्रह–पन्द्रह हजार क्विंटल की क्षमता वाले दो बड़े बीज विधायन संयंत्रों की स्थापना करने का प्रस्ताव भी है। हरियाणा कृशि वि वविद्यालय ग्रामीण जनता को उन्नत कृशि तकनीकों की जानकारी देने के लिए पथ प्रद ार्न का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इस वर्श के दौरान जिला कुरूक्षेत्र में, कौल के स्थान पर वि वविद्यालय के दूसरे कैम्पस ने कार्य करना भाुरू कर दिया हैं, जहां कृशि अनुसन्धान कालेज की स्थपना की गई है। वहां चावल और भााक फसलों संबंधी अनुसंघान कार्य यिका जा रहा है। सरकार द्वारा उन छोटे किसानों, सीमान्त

किसानों एवं कृशि श्रमिकों की ओर निरन्तर वि ोश ध्यान दिया जा रहा है, जोकि ग्रामीण समुदाय के कमजोर तथा अत्यन्त उपेक्षित अंग है। अम्बाला, भिवानी, और गुड़गावां जिलों में स्थापित की गई परियोजनाएं गत कुछ वशोंर् से प्र ांसनीय प्रगति कर रही हैं और समुयाद के इस वर्ग के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान मे ये पर्याप्त रूप से सहायक होगी। हरियाणा कृशि उद्योग निगम ने किसानों के लिए सेवा सुविधाएं जुटाने का अच्छा कार्य किया है। इसने जींद के स्थान पर लगभग एक करोड़ रूपये की कुल लागत से बनाए गए आधुनिक प ुचारा संयंत्र से संतुलित प ु चारे का उत्पादन भ्रुरू कर दिया है। हरियाणा भूमि सुधार और विकास निगम ने भूमि सुधार का कार्य भी प्रारम्भ कर दिया है और इसने चालू वर्श के दौरान पहले ही 700 एकड़ क्षेत्र का सुधार कर लिया है।

राज्य के निर्माण के समय ग्रामीण पेयजल–सप्लाई सुविधाएं पूर्णयता अपर्याप्त थीं। पेयजल अस्वच्छ एवं आदिकालीन ढंग से प्राप्त किया जाता था। अतः राज्य के सभी गांवों को पेयजल सप्लाई की व्यवस्था करने के लिए एक महत्वाकांक्षी योजना तैयार की गई। भाहरी और ग्रामीण लोगों को पेयजल सप्लाई और मल व्यवस्था संबंधी सुविधाएं जुटाने के लिए पव्रथम तीन पंचवर्शीय योजनाओं के दौरान केवल 7 करोड़ रूपए के व्यय के मुकाबले में चौथी पंचवर्शीय अवधि के दौरान 10.39 करोड़ रूपए की रा ि ा अब से पहले खर्च की जा चुकी है। राज्य के 61

नगरों तथा 713 गांवों में पेयजल सुविधाएं और 24 नगरों में मल व्यवस्था की कतिपय सुविधाएं सुनि चत करना सम्भव हो सका है। पांचवी पंच वर्शीय योजना के दौरान 1400 अन्य गांवों मे भी इस प्रकार की सुविधाएं जुटाने का प्रस्ताव है और चालू वर्श के दौरान राज्य के लगभग 60 अतिरिक्त गांवों में जल सप्लाई सुविधाएं प्रदान करने की सम्भावना है। राज्य सरकार यह आ ाा करती है कि राज्य के सभी गांवों मे लोगों की इस मूलभूत आव यकता को भीघ्र ही पूरा कर दिया जाएगा।

कल्याणकारी राज्य लोगों के भाारीरिक स्वास्थ्य की अवहेलना नहीं कर सकता। इस क्षेत्र में भी प्र ांसनीय उपलब्धि हुई है। वर्तमान अस्पतालों में विभिन्न रोगों के निदान की सुविधा तथा उनके उपचार के लिए आधुनिक, सरल एवं परिश्कृत उपस्करों की व्यवस्था की गई है नारयणगढ़ के पिछड़े क्षेत्र में एक विस्तृत अस्पताल काम्पलैक्स पूरा किया गया है। भिवानी के पिछड़े क्षेत्र में 500 बिस्तर वाला एक आधुनिक अस्पताल बन रहा है। गुड़गांव, कुरूक्षेत्र तथा जीन्द में जिला सिविल अस्पतालों के भवन निर्माणाधीन हैं और इस वर्श के दौरान इनके मुकम्मिल किए जाने की सम्भावना है। विभिन्न अन्य अस्पताल तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र भवन निर्माणधीन हैं और यह आ ा है कि कम से कम प्रत्येक तहसील नगर में भीघ्र ही आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कर दी जाएंगी। राज्य सरकार मैडिकल कालेज, रोहतक की ओर निरन्तर वि ोश ध्यान दे रही है और गुर्दे, क्षय और अन्य

रोगों से पीड़ित रोगियों के उपचार के लिए 225 बिस्तर वाले एक नए वार्ड के निर्माण के परिणामस्वरूप अस्पताल में बिस्तारों की संख्या 1056 तक बढ़ा दी गई है। कैंसर संस्थान का भवन भी निर्माणाधीन है और वर्श 1975 की प्रथम तिमाही में इसके मुकम्मिल हो जाने की सम्भावना है। परिवार नियोजन में बहुत प्रगति हुई है और व्यापक अभियानों के परिणामस्वरूप राजय ने अब परिवार नियोजन के क्षेत्र में दे ा के प्रथम तीन राज्यों में अपना स्थान बना लिया है।

ि ाक्षा के क्षेत्र में कुरूक्षेत्र वि वविद्यालय को हरियाणा के सभी कालेजों के लिए संबंधन वि वविद्यालय के रूप मे परिवर्तित किया जाना एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। स्कूल अध्यापकों को सेवा के दौरान प्रि ाक्षण देने के कार्यक्रम को भाुरू करके ि ाक्षा के स्तर मे सुधार लाने पर अधिक बल दिया गया है। इस कार्यक्रम को भाुरू करके ि ाक्षा के स्तर मे सुधार लाने पर अधिक बन दिया गया है। इस कार्यक्रम के पांच वर्शो मे पूरा होने की संभावना है। समाज के निर्धन वर्गो के 6–11 वर्श की आयु के बच्चों तथा देहाती क्षेत्रों की महिलाओं के लिये वि ोश रूप से बनाए गए वयस्क ि ाक्षा कार्यक्रम तथा अनौपचारिक ि ाक्षा कार्यक्रमों की ओर ध्यान दिया जा रहा है। हरियाणा मे सभी कालेजों के विद्यार्थियों के लिये हिन्दी को एक अनिवार्य विशय घोशित कर दिया गया है। सरकार प्रस्ताव कर रही है कि आगामी वश्र से नौकरी पे ाा व्यक्तियों के लाभ के लिय राज्य मे

सांध्यकालीन कालेजों मे और अधिक व्यवसायिक पठ्क्रमों को प्रारम्भ कर दिया जाये।

समाज के ऐसे दलित वर्गो की आवास संबंधी आव यकताओं पर भी वि ोश ध्यान दिया जा रहा है, जिन्हे इस सयम बहुत ही अस्वस्थ परिस्थितियों मे रहा पड़ता है और जो मौसम की कठारता का ि ाकार भी बने हुए है। राज्य आवास बोर्ड ने, जिसे मुख्यतया अर्थिक रूप से निम्न वर्गों की गृह निर्माण संबंधी आव यकताओं को पूरा करने के लिये अनाया गया था, इमारती सामान और धन संबंधी कठिन बाधाओं के होते हुए भी पूरे उत्साह के साथ अपना निर्माण कार्य जारी रखा। वर्श 1973–74 के दौरान 500 मकानो का निर्माण कार्य पूरा किया गया और चालू वित्त वश मे 1500 मकानो के निर्माण की संभावना है। आगामी वर्श के दौरान 3000 और मकानो के निर्माण की संभावना है। यह बोर्ड सस्ते मकानों के निर्माण की योजना पर भी विचार कर रहा है, जिन का मूल्य लगभग 5000 रूपये होगा पर जिस मे विभागीय खर्चे तथा भूमि का मूल्य भाामिल नही होगा..... राज्य मे सहकारी गृह निर्माण को बढ़ावा देने के लिये एक ि ाखर सहकारी गृह निर्माण वित्त समिति का गठन किया हे और चालू वर्श मे पांच लाख रूपये की हिस्सा पूंजी का उपबंध किया गया है।

राज्य सरकार राज्य मे बेरोजगारी समाप्त करने के लिये उत्सुक है। ि ाक्षित बेरोजगारों के लिये रोजगार खोजना एक प्रमुख समस्या है। जनवरी, 1974 से जून, 1974 तक पंजीकृत कुल

उम्मीदवारों मे 11 प्रति ात को रोजगार दिया गया, जो उस समय के आखिल भारतीय 8.4 प्रति ात आंकड़ों की तुलना मे कहीं अधिकर है। चालू वर्श के दोरान 4 ग्रामीण जन भाक्ति यूनिट खोले गए है और भाारीरिक रूप से अपंग व्यक्तियों को, जिनमे अ ाक्त भूतपूर्व सैनिक सम्मिलित है, वि ोश रोजगार सहायता प्रदान करने के विचार से चण्डीगढ़ मे पंचकूला के स्थान पर एक वि ोश रोजगार कार्यालय स्थपित किया गया है। राज्य ि ाक्षित बेरोजगार व्यक्तियों के स्वतः रोजगार की विभिन्न स्कीमों को भी प्रोत्साहन अधिक लोगों को रबी की फसल तक निर्वाह करने के लिये रोजगार मिलने की आ ा है।

आर्थिक रूप से पिछड़े सामाजिक रूप से अव्यवस्थित तथा भाारीरिक रूप से अ ाक्त व्यक्तियों के कल्याण की ओर उच्च प्राथमिकता दी जाती रही है। पानीपत तथा सोनीपत दोनो स्थनों पर अंधों की संस्थाओं मे लगभग 100 व्यक्तियों को ि ाक्षा दी गई है। आगामी वर्श इन सेवाओं को विस्तृत करने का प्रस्ताव है। भाारीरिक रूप से अपंग व्यक्तियों के एक प्रि ाक्षण कार्यक्रम आरम्भ किया गया है जिसके अंतर्गत वे विभिन्न फैक्ट्रियों मे प्रवेश प्राप्त करेंगे और प्रि ाक्षण अवधि के दौरान 75 रूपये मासिक वजीफा प्राप्त करेंगे। उपेक्षित व कदाचारी बच्चाों की देखभाल रक्षा, भरण पोशण तथा पुनर्वास के लिये ि ा ु अधिनियम, 1974 के अधीन ि ा ु कल्याण बोर्डो की भी स्थापना की जा रही है। हरियाणा भिक्षावृति निवारण अधिनियम 1974 के लागू हो जाने के

परिणामस्वरूप भिखारियों के लिये पानीपत मे एक प्रमाणित संस्था की स्थापना की गई है। राज्य सरकार ने अनुसूचित जातियों, पिछड़े वर्गो तगिा विमुक्त जातियो के उत्थान की ओर पूरा ध्यान दिया हैं इन श्रेणियों के लिये विभिन्न कल्याणकारी स्कीमों पर अगले वर्श के दौरान 159 ला ा रूपये खर्च करने का प्रस्ताव है। सरकार के प्रयत्नों की संपूर्ति के निमित हरियाणा हरिजन कल्याण निगम भी इन लोगों के कल्याण की देखभाल कर रहा । निगम ने विभिन्न व्यापार एवं व्यवसायों को चलाने के लिए अब तक 46.16 लाख रूपये के कर्जे वितरित किये है। निगम ने करनाल मे जूता बनाने का केन्द्र भी स्थापित कर लिया है और अधिक रोजगार देने के लिये राज्य के अन्य भागों मे लघू उद्योग यूनिटें स्थापित करने की योजना बनाई जा रही है। सरकारी नौकरियों के क्षेत्र मे भी अनुसूचित जातियों एवं पिछड़े वर्गो के लिये आरक्षण की स्कीम पर भी लगातार अमल होता है तथा सरकारी सेवा मे अनुसूचित जातियों एवं पिछड़े वर्गो के अनुपात को उभारने के लिये हर संभव प्रयत्न किया गया है।

चालू वर्श मे कृशि क्षेत्र की आव यकताओं के कारण राज्य को अपने नियंत्रण से बाहर की परिस्थितियों को गौण स्थान देना पड़ा। इसके परिणास्वरूप उपलब्ध बिजली स्त्रोत के अंतर्गत रहते हुए सरकार को बिजली की भारी कटौती करनी पड़ी जिस से राज के औद्योगिक उत्पादन पर विपरित प्रभाव पड़ा। फिर भी औद्योगिक यूनिटों को जैनेरेटिंग सैट खरीदने के लिये उदार ऋण

दिए गए ताकि वे अपने विद्युत उत्पादन से बिजली सप्लाई को बढ़ा सकें। राज्य मे चालू, होने वाले नए उद्योगों को प्रोत्साहन देने वाली विभिन्न स्कीमों को क्रियान्वित किया जा रहा है। रिवाड़ी, भिवानी, जींद, हांसी और टोहाना जैसे उत्पादन केन्द्रों मे औद्योगिक संभाव्यता के सवैक्षण को भुरू करके पिछड़े क्षेत्रों की औद्योगिक वृद्धि की ओर भी वि ोश ध्यान दिया जा रहा है। इन विकास केन्द्रो मे उद्यमकर्ताओं के अभिज्ञान और उनके लिये बैंक योग्य स्कीमें तैयार करना जारी है तथा आ ाा की जाती है कि पिछड़े क्षेत्रों मे इसका प्र ांसनीय प्रभाव पड़ेगा। इन स्कीमों के अंतर्गत, चुने हुए उद्यमकताओं को समस्त संबंधित संस्थाओं द्वारा पैकेज सहायता भी दी जाएगी। राज्य औद्योगिक विकास निगम ने सरकारी एवं संयुक्त सेक्टर के पहले यूनिट अर्थात् हरियाण ब्रुवरीज ने पहले से ही उत्पादन चालू कर दिया है तथा दो संयुक्त सैक्टर परियोजानाएं हिसान मे हरियाणा पलिस्टील्ज लिमिटेड तथा फरीदाबाद मे हरियाणा टेलीवीजनज प्रायः मुकम्मिल हो चुके हैं और यह 1975 के आरम्भ मे उत्पादन करना प्रारम्भ कर देंगी। कुण्ड मे स्लेट परियोजना ता नारनौल मे संगमरमर परियोजना को विस्तृत तथा आधुनिक बनाने के लिये हरियाणा मिनरल्ज लिमिटेड अच्छा कार्य कर रही हैं और इसके पि चमी जर्मनी को स्लेट निर्यात करने के कार्य मे उल्लेखनीय प्रगति की है। इसने चूना उत्पादन परियोजना प्रारम्भ की है। चूना, सीमेंट का प्रगतिस्थापी हो सकता है, जबकि दे ा मे सीमेंट की अत्याधिक कमी हो रही है।

यह अत्याधिक महसूस किया जा रहा है कि हरियाणा जैसे छोट से सुगठित राज्य मे, जो कि प ुधन के लिये सदैव प्रसिद्ध रहा है, डेरी उद्योग को सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप मे विकसित किया जा सकता है। वास्तव मे राज्य मे भवेत क्रांति लाले का उदे य ग्राम्य निर्धनता को समाप्त करना हैं 1970 मे हरियाणा मे स्थापित किया गया डेरी विकास निगम अत्युत्तम कार्य कर रहा है। जींद, भिवानी और अम्बाला मे तीन दुग्य संयंत्रों ने पहले ही काय्र प्रारम्भ कर दिया है और 1975–76 के अंत तक रोहतक, फरीदाबाद तथा हिसार मे तीन और सयंत्र स्थापित करने का प्रस्ताव है। सिरसा तथा पानीपत मे भी दो और दुग्ध संयंत्र स्थापित करने का प्रस्ताव प्रस्ताव है। इन सभी दुग्ध संयंत्रो के सफलतापूर्वक मुकम्मिल हो जाने पर, राज्य के सारे महत्वपूर्ण दुग्ध क्षेत्र इस स्कीम के अंतर्गत आ जायेगे और राज्य मे फालतू दूध से अधिकतम लाभ उठाने के लिये एक दुग्ध ग्रिड बनाया जायेगा। हरियाणा परम्परा से प ुधन मे समृद्ध है और राज्य के प ुधन के स्तर को स्थाई एवं उन्नत बनाने के उदे य से करनाल, गुड़गांव, जींद कुरूक्षेत्र, भिवानी और अम्बाला मे व्यापक प ु विकास परियोजनाएं स्थापित की गई है। सरकारी प ुधन फार्म हिसार मे आस्ट्रेलिया सरकार के सहयोग से एक सर्वतोमूखी प ु विकास कार्यक्रम भी तैयार किया गया है।

राज्य मे सहकारी आन्दोलन की ओर पर्याप्त ध्यान दिया गया और लोगो को उर्वरक वितरण, कृशि उपज विपणन, उपभोक्त

भण्डार इत्यादि महत्वपूर्ण क्षेत्रो मे निरंतर सेवा प्रदान की जाती रही हैं राज्य सहकारी सप्लाइ तथा विपणन संघ के प ा चारा संयंत्र, बेकरी, राइस भोलर, कपास ओटाई तथा विधायन यूनिट कीटमार निर्माण यूनिट आदि जैसी कृशि, औद्योगिक परियोजनाएं प्रारम्भ की है। पानीपत और रोहतक की वर्तमान चीनी मिलों के अतिरिक्त करनाल और सोनीपत मे दो और सहकारी चीनी मिलें स्थापित की जा रही है। इसके अतिरिक्त पांचवी पंच वर्शीय योजना अवधि के दोरान दो और सहकारी चीनी मिलें प्रारम्भ करने का कार्यक्रम है।

मुख्यतः कृशि प्रधान अर्थ व्यवस्था के अंतर्गत ग्रामीण सड़कों के महत्व को किसी प्रकार कम नही आंका जा सकता। सड़कें केवल बीजों उर्वरकों और कीटमार जैसे अनिवार्य वस्तुओं के द्रुत परिवहन के लिये ही आव यक नही है, अपितु कृशि उपज के विपणन के लिये भी आव यक है। द्रव्य साधनों की कमी के कारण यद्यपि गांवों को सड़कों के साथ जोड़ने का उदे य पूरी तरह प्राप्त करना संभव नही हुआ है तथापि इसके लिये प्रयत्न किये जा रहे है। पुलों और पुलियों के निर्माण के साथ साथ सड़कों के संधारण की और भी अधिक ध्यान दिया जा रहा है। इस वर्श न्यूनतम आव यकता कार्यक्रम के अन्तर्गत 50 लाख रूपये की लागत से सड़कों का निर्माण प्रारम्भ किया गया है। इस प्रकार 1500 और इससे अधिक जन संख्या वाले गांव पक्की योजक सड़कों से जोड़ दिया जायेगे। सड़को के निर्माण के अतिरिक्त,

हरियाणा राज्य परिवहन द्वारा जो कि राज्य का पूर्णरूपेण राश्ट्रीयकृत उपक्रम है, संचार साधनों का और अधिक विस्तार ता सुधार किया गया। हरियाणा राज्य परिवहन की बसों की संख्या मार्च, 1974 मे 1571 थी, जो नवम्बर 1974 तक बढ़कर 1640 हो गई और इस संख्या के चालू वर्श के अन्त तक 1850 तक बढ़ जाने की सम्भावना हैं आगामी वर्श मे 200 अतिरिक्त बसों की संख्या बढ़ा दी जायेगी । चालू वर्श के दौरान कैथल मे एक और डिपों बनाया गया और यातायात के सभी मुख्य स्थानों पर पूर्ण साधनयुक्त बस अड्डे बनाने का प्रस्ताव है।

मूलभूत आव यकताओ तथा सुविधाओं के संबंध मे समाज के कमजोर वर्गों की अपेक्षाओं और कृशि तथा संबद्ध क्षेत्रों मे सुधार लाने के साथ साथ पर्यटन संबंधी कार्यो का वि ोशतः राश्ट्रीय राजमार्गो पर जाल बिछाकर, राजय सरकार की प्रगति का वि ालबिम्ब उभारने मे सफल हुई है। राज्य मे आने वाले पर्यटक राजय सरकार के गति ील और दूरद र्ी दृश्टिकोण की भूरि भूरि प्र ंसा करते हुए गए है कि सरकार ने ऐसी पर्यटक सुविधाएं जुटाई है जिन मे सरकारी सैक्टर के अंतर्गत मोटलों और रेस्तराओं का दक्षतापूर्वक एवं लाभदायक रूप से चलाना ही भाामिल नही है, बल्कि खरीद सुविधाए, पैट्रोल पम्प, प्राथमिक चिकिस्सा केन्द्र और ि ाविर स्थल भी भाामिल है। पर्यटर काम्पलैक्सों को पूरा किया जा चुचका हे जिन मे एक धारूहेड़ा के स्थान पर दिल्ली जयपुर राजर्मा पर है और दूसरा होडल के स्थान

पर दिल्ली आगरा राजर्मा पर है। बड़खल झील, चक्रवर्ती झील, सोहना, पिपली, समालखा, पिंजौर आदि वर्तमान पर्यटक काम्पलैक्सों मे सुविधाओं का और विकास किया गया हैं तीग्र गति से विकास कर रहे राज्य के रूप मे हरियाणा का चित्र प्रस्तुत करने के लिये सभी पर्यटन काम्पलैक्सों मे छोटे इम्पोरियम स्थापित करने का प्रस्ताव है।। जिलो मे मुख्य यूनिटों के निकट लोक प्रद र्न ाला स्थापित करने का भी प्रस्ताव है, जिससे हरियाणा की ऐतिहासिक और सांस्कृति परम्परा को द ार्या जा सके।

संदर्भाधीन अवधि के दौरान राज मे खेलों की उन्नति की ओर वि ोश ध्यान दिया गया। चालू वर्श के दौरान 18 प्रि ाक्षण ि विरों का आयोजन किया गया, जिन मे 297 प्रि ाक्षणार्थियों को प्रि ाखण दिया गया। सोनीपत जिले के राई गांव मे मोतीलाल नेहरू स्पोर्टस स्कूल की स्थापना करके राज के बालाकें को अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण सामंजस्य पूर्ण विकास करने का अवसर प्रदान किया जा रहा है, ताकि वे अन्य राज्यों के बालकें का अच्छे ढंग से मुकाबला कर सके। इस स्कूल मे उच्चतर माध्यमिक स्तर तक की ि ाक्षा दी जायेगी। इस सकूल का खर्च रियायती होगा, ताकि समाज मे कमजोर तथा गरीब वर्गो के बच्चों को स्कूल से लाभ पहुंचाने का पूरा पूरा अवसर प्राप्त हो सके। भूतपूर्व सैनिको और स ास्त्र सेना के कर्मचारियों तागि अनुसूचित जातियों के बच्चों के लिये वि ोश आरक्षण किये जाते है। इस वर्श मोतीलाल नेहरू स्कूल की पोशक संस्था के रूप मे कमला

नेहरू स्कूल के नाम से इसका एक अवर विंग भी स्थापित किया गया है । ये दोनों स्कूल आवास संस्थाएं है। इन संस्थाओं मे ि ाखा तथा खेलों की सर्वोतम व्यवस्था की जाती है, ताकि इनकी गणना दे ा की सर्वोतम संस्थाओं मे हो सके।

वर्श 1974 के दौरान सामान्य कानून और व्यवस्था की स्थिति संतोशजनक रही है। खाद्यान्न तसकरी, अनिवार्य वस्तुओं की जमाखोरी तथा चोर बाजारी की बुराईयों को कठोर उपायों और छिपाए गए भण्डानों को बाहर निकलने के लिये राज्य द्वारा चलाए गए अभियानों द्वारा प्रभावपर्ण ू ढंग से रोका गया। आपातकालीन स्थिति मे जनता को बिजली की सप्लाई परिवहन तथा अन्य सुविधाओं जैसी अनिवार्य सेवाएं प्रदान करने के विचार से तकनीकी कर्मचारियों की एक स ास्त्र पुलिस बटालियन भी स्थापित की गई है।

उपर्युक्त सामाजिक आर्थिक उपायों क्षरा राज्य ने लोक कल्याणकारी राज्य स्थापित करने के अपने उदे य को पूरा करने का प्रयत्न किया है। हमारे समक्ष बहुत बड़ा कार्य रहा है, और जबकि थोड़ी अवधि मे हुई उपलब्धि को सराहनीय समझा जा सकता है। परन्तु अभी निश्पादित किये जाने वाले कार्यो का परिमाण एक महान चुनौती है। चौथी पंचवर्शीय योजना के दौरान महत्पपूर्ण उत्पादन दर की प्राप्ति के बादे, हम विभिन्ना वितीय प्रतिबंधे सहित पांचवीं पंचवर्शीय योजना मे प्रवे ा कर चुके है। वर्श 1974–75 मे हम 100 करोड़ से अधिक की आयोजना की

आ ाा कर रहे थे।किन्तु आयोजना आयोग ने हम पर यह प्रतिबंध लगा दिया कि हम लगभग 82 करोड़ रूपये के परिव्यय का आयोजन करे। ऐसा संकेत हे कि अगले वर्श मे भी हमारी आयोजना पर इसी प्रकार का प्रतिबंध रहेगा। अतः हमें अपनी प्रगति की गति को भी सम्भवतः धीमा करना पड़ेगा। हमारे मार्ग मे आने वाली ये आर्थिक व कठिनाईयों ऐसे समय दूर्भायपूर्ण है, जबकि हम तेजी से प्रगति के मार्ग पर अग्रेसर हो रहे थे। तथापि हमारे सीमित स्त्रोतों को सिंचाई तथा बिजली जैस उन क्षेत्रो के प्रयोग मे लाया जा रहा है, जिन्हें परमाग्रता दी जानी चाहिए। तथ्य इस बात से भी सपश्ट है कि चालू वर्श की योजना मे केवल सिंचाई तथा बिजली स्कीमों संबंधी आव यकताओ ंके लिये 66.56 प्रति ात खर्च निर्धारित किया गया है। तथापि मुझे आ ाा है कि वतमान कठिनाईयां अल्पकालिन होगी और हम भीघ्र ही इन कठिनाइयों को पार करने मे सफल हो जायेगे। हमारा उत्पादन दर दे ा मे अधिकतम माना गया है और हमे ंभविश्य मे भी इसे बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

अब आप लोग महतवपर्ण कार्य मे वयस्त हो जायेगे, जिसमे सरकार के आगामी वर्श मे बजट प्रस्ताव भाामिल है और मुझे वि वास है कि आप विभिन्न विशयों पर उपयोगी एवं रचनात्मक विचार विम र्ा करेंगे। मैं आपके कार्य मे सम्पन्न होने की कामना करता हूं और चाहता हूं कि नव वश्र आपके लिये सुखद एवं मंगलमय होवे।

जय हिन्द।

अध्यक्ष द्वारा घोशणा

(i) सभापतियों की तालिका

Mr. Speaker: Under Rule 13(1) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Haryana Legislative Asembly, I nominate the fowolling members to serve ont he Panel of Chairmen:-

1. Rao Nihal Sing.

2. Rao Dalip Singh

3. Chaudhri Ishwar Singh

4. Chaudhri Manphul Singh

(i) याचिका समिति

Mr. Speaker: Under Rule 13(1) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Haryana Vidhan Sabha, I nominate the following membes to serve on the Committee on Petitions:-

1. Smt. Lehwati Jain (Deputy Speaker) Ex-officio Chairman.

2. Rao Dalip Singh

3. Sh. Gulab Singh Jain.

4. Chaudhri Phool Chand (Rohat); and

5. Chaudhiri Phool Chand (Mullana).

सचिव द्वारा घोशणा

Secretary: Sir, I have to inform the House that the Haryna Municipal Common Lands (Regulation) Bill, 1974, which was reconsidered and passed by the Haryana Legislative Assembly on the 18the January, 1974, has been assented to by the President.

Sir, I beg to lay on the Table of the House a statement showing the Bills which were passed by the Haryana Legislative Assembly during its last (November-December) Session, 1974 and have since been assented by the Governor.

Statement

1. The Haryana contingency Fund (Amendment) Bill, 1974.
2. The Punjab Homoeopatich practitioners (Haryana Amendment) Bill, 1974.
3. The Punjab town Improvement (Haryana Second Amendment) Bill, 1974.
4. The Haryana Land holgings Tax (Second Amendment) Bill, 1974.
5. The Haryana mechanical Vehicles (Bridge Tolls) Bill, 1974.
6. The Punjab Land Revenue (Haryana Amendment) Bill, 1974.
7. The Haryana Essential Services Maintenance Bill, 1974.

8. The Haryana State legislature (Prevention of Disqualificaiton) Bill, 1974

9. The Punjab Gram Panchayat (Haryana Third Amendment) Bill, 1974.

10. The Punjab New mandi Townships (Development and Regulations) Haryna Amendment Bill, 1974.

11. The Haryana Housing Board (Amendment) Bill, 1974.

12. The Haryana Appropraition (No. 5) Bill, 1974.

13. The Punjab Panchayat Samitis (Haryana Validation) Bill, 1974.

14. The Punjab Co-operative Societies (Haryana Second Amendment) Bill, 1974.

भाोक प्रस्ताव

मुख्य मंत्री (चौधरी बंसी लाल): स्पीकर साहब, हमारे सरन के पिदले सै ान से लेकन अब तक हमारे दो साथी हम से बिछुड़ गये है, उनके लिये मै। कंडोलैंस रैजोल्यू ान पे ा करता हूं।

This House places on record its deep sense of sorrow on the sad demise of Shri Hira Lal Shastri, first Chief Minister of Rajasthan on December 28, 1974.

Born on November 24, 1899 at jobner in Jaipur District. Shri Shastri was educated at Jobner and Jaipur. He

took over as Geneal Secretay of the jaipur Rajya Praja Mandal in 1936. He became General Secreatry of the Rajputana Regional Council of the all India States peoples. Conference in 1945-46 and was later appointed as General Secretary of the All India State people Conference.

He was elected to the Consitituent Assembly in 1947 and remained a Member of the Provisional Parliament til 1950. In 1948, he became the first popular Chief Minister of Jaipur State and subsequently Chief Minister of Rajasthan in 1949.

He founded the Banasthli Vidyapeeth in 1935, which has now become a national institute of girls' educaiton.

In his death, the country has lost a great patriot. The House resolves to send it's hear felt condolences to the members of the bereaved family.

This House places on record its deep sense of sorow on the death of Sarodaya leader, Shri Shankarrao Deo, on December 30, 1974.

Born on January 4, 1894 at Bhor in Poona District he plunged into the freedom movement as a volunteer in the famour Chaiparan Satyagrah againt the white tea planters.

He was President of the Maharashtra Pradesh Congress Committee and member of the Congress working Committee for several years. He was General Secretary of the Congrees for sometime and member of the Constituent Assembly he joined the Sarvodaya Movement in 1950.

His books on religion, Bhoodan and the Sarvodaya movement have been translated into many languages.

In his death, the country has lost a great social worker. The House resolves to send its heart felt condolences to the members of the bereaved family.

सिंचाई तथा विद्युत मंत्री (श्री बनारसी दास गुप्त): अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता के बोलने के प चात् मैं बोलने की कोई आव यकता नही समझता था, परन्तु पिछले अधिवे ान के प चात् हम थोड़े ही समय के बाद यहां एकत्रित हुए है, इसके बावजूद भी इस अल्प काल मे ही हमारे दे ा के दो महान स्वतंत्रता सेनानी हमारे से जुदा हो गये। उनमें से एक के साथ मेरा व्यक्तिगत और बड़ा लम्बा सम्पर्क रहा है। वे है श्री हीरा लाल भाास्त्री, जो आल इंडिया स्टेटस पीपल्ज कान्फ्रैंस के जनरल सैक्रेटरी भी रहे । अध्यक्ष महोदय, मैंने भाास्त्री जी को बड़े निकट से देखा। वे बड़े बहादुर थो, बड़े निर्भक और बड़े स्पश्ट वक्ता थे। यही कारण था कि रियासती प्रजा मे बड़े लोकप्रिय थे। यदि उस समय की रियासती प्रजा का मैं उन्हें लोक नायक कहूं तो कोई अति योक्ति नही होगी। लेकिन अध्यक्ष महोदय, आप जानते है काल अपनी गति से और अपने हिसाब से चलता है। वह किसी को माफ नही करता। चाहे कोइ कितना बड़ा राजनेता हो, कितना बड़ा दे ा भक्त हो, कितना वीर सेनानी हो या कितना बड़ा इंजीनियर हो, काल की गति और काल की सीमा मे सब को बंधना पड़ता है। चाहे कोई कितना बड़ा राजनेता हो, कितना बड़ा

दे ाभक्त हो, कितना बीर सेनानी हो या कितना बड़ा इंजीनियर हो, काल की गति और काल की सीमा मे सब को बंधना पड़ता है। भाास्त्री जी ने उस जमाने मे जबकि रियासती प्रजा दोहरी गुलामी यानी चक्की के दो पाटो मे पिसती जा रही थी, उस समय उन्होंने रियासती प्रजा की स्वाधीनता का एक नारा बुलन्द किया। वह नारा उन्होंने न केवल राजस्थान मे, बल्कि तमाम हिन्दुस्तान मे बुलन्द किया। मुझे भी जींद स्टेट प्रजा मण्डल का अध्यक्ष तथा सैक्रेटरी होने के नात कई बार उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रजा मंडल का जब भी कोइ अधिवे ान होता था, तो उनसे मुलाकात होती थीं इसके अलावा हमारे सामने जब भी कोइ बड़ी भारी बाधा या भारी संकट आता था, तो मैं उनके पास जाता ाि और उनसे एक नई रो ानी, एक नई पेरणा और एक नया साहस लेकर आता थां अध्यक्ष महोदय, जिन मेरे साथियों को देसी रजवाड़ों मे स्वाधीनता प्राप्ति का काम करने का अनुभव प्राप्त है, वे जानते है कि किस प्रकार के संकट और किस प्रकार की आधाओं का समाना करना पड़ता था। ब्रिटि ा इलाकों मे भी आंदोलन करने वाले होते थे, उनके ऊपर इतनी ज्यादती और अत्याचार किये जाते थे जिसका कि वर्णन नही किया जा सकतां भाास्त्री जी अन्तिम समय तक रजवाड़ा भाही के खिलाफ लड़ते रहे। इस संघर्श के बाद सक दिन ऐसा आया जिस दिन हमारा दे ा स्वतंत्र हुआ। दे ा की स्वतंत्रता के साथ साथ सरदार पटेल की कोि ा ा से हिन्दुस्तान की तमाम रियासतें आजाद हुई तो उस समय हीरा लाल जी भाास्त्री, राजस्थान के प्रथम मुख्य मंत्री

बनाए गए और उसके प चात् जब उन्होंने राजनीति से सन्यास लिया, तो वे रचनात्मक कार्यो मे लग गये। इन्होंने 1935 मे बनास्थली कन्या विद्यापीठ की स्थापना की, जोकि हिन्दुस्तान की कन्याओं की ि ाखा के लिये एक उत्कृश्ट संस्था हैं उनकी धर्मपत्नी स्वर्गवास हो जाने के बार मुझे आ ाा है कि श्रीमती रत्ना ाास्त्री उसका संचालन उसी ढंग से करती रहेंगी । इन भाब्दों के साथ मै श्री हीरा लाल भाास्त्री जी के निधन पर अपनी श्रद्धा के फूल समर्पित करता हूं।

श्री भांकर राव देव जी के प्रति भी मैं अपनी श्रद्धांजलि भेंट करता हूं।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता (बेरी): स्पीकर साहब, ये दो महापुरूश इस संसार से चले गये। भाास्त्री जी के साथ मुझे करीब से, पर्सनल तौर से काम करने का मौका तो नही मिला, लेकिन तीन माह तक देहली मे एक ही फ्लैट मे रहने का मौका मिला । मै ंलोक सभा का मेंबर था और वह पहल लोक सभा के मैंबर थे। मैंने देखा कि उस जमाने की जो डैडीकेटिड पुलीटिकल क्लास थी, उस मे और जो बाद मे नान कुमिटल किस्म की लीडरि ाप डिवैप्ल हुई, उस मे बहुत डिफ्रैंस था। उनके रहन साहन मे बहुत फर्क थां उनके पास मैंने देखा पचास साठ आदमी आते और वे नीचे कालीन बिछा कर फ र्ा पर सो जाते और साथ ही बैठकर उनके साथ रोटी खा लेते थे। उनको कभी ख्याल नही होता था कि कुछ दिन पहले वह चीफ मिनिस्टर होते थे। सब से अगर

उनका मुकाबला करे, स्टेटसमैंन के लिहाज से या अन्दरूनी स्ट्रैंथ के लिहाज से, तो वह बहुत बड़े थे और उनका रहन सहन डिफ्रैंट था। वह बहुत बातें कहते थे, लेकिन सबसे बड़ी बात वह यह कहा करते थे कि एक जमाना ऐसा आएगा कि वे आदमी जिन्होंने आम आदमियों से ताकत हासिल नही की है, वह तो सख्त अल्फाज इस्तेमाल किया करते थे, लेकिन मैं माइल्ड लैंग्वेज मे कहता हूं कि वह बेड़ा गर्क कर देंगे। मैं इनको इज्जत के साथ श्रद्धांजलि पे ा करता हूं।

दूसरे जो चले गये है, वह है एक महाराश्ट्रीयन श्री भांकर राव देवं चीन से मार्च करने का जब इन्होंने एलान किया तो उसके बाद तमाम दूनियां के जर्नलिस्टस ने कोि ा ा की कि वह दूसरे रास्ते से जाये चीन गवर्नमैंट ने उन को इत्लाह दी कि हम आने मुल्क के अंदर नही आने देंगे उस वक्त जो उन्होंने कहा और चाईना के बारे मे, टोटेलिटेरियनिजम के बारे मे उनको जो उस वक्त डिस्इल्यूजनमैंअ हुई, वह बहुत भाइयों को याद होगा। उस वक्त पहले पंडित जी को भी ख्याल नही था कि चाईना गवर्नमैंट एक टैरीटरी के बारे मे अपने पड़ोसी हिन्दुस्तान के साथ इस तरह कर सकती है, जो जैसे दूसरे ईमानदार लोग समझते थे, वेसे ही वह भी ईमानदारी के साथ समझते थे कि सारी दुनियां भाई चारा है और चाईना इस भाईचारे मे सबसे आगे होगा। तो जब उस फकीर को चाईना की सरहद पर नही जाने दिया गया, उस वक्त जो उन्होंने ब्यान दिया, उसका एक फिकरा ही आपको

याद दिलाना चाहता हूं। उन्होंने कहा कि चाईना, जो अपने आप को मनुश्य जाति की लीडरि ाप का दावा करता है, वह हिन्दुस्तार से बहुत कुछ सीख सकता है। ऐसे महापुरूश के चले जाने से हमें दुःख है। तो मैं लीडर आफ दी हाउस की फीलिंग्ज के साथ एसोि ाएट होता हुआ इन महापुरूशों को श्रद्धांजति पे ा करता हूं।

Mr. Speaker: Hon. Members, Shri Hira Lal Shastri, former Cheif Minister, Rajasthan, died of heart attack on 28the December, 1974. He was a great nationalist and was in the vanguard of the Praja Mandal ovemnet in the erstwhyile Princely States. He was slo closely associated with Banasthli Vidyapeeth, now a leading educaitonal institution in the country. He was elected to the Consitituent Assembly in 1947 and elected to the Lok Sabha in 1957. He was the first popular Chief Minister of Jaipur State and subsequently the firest Chief Minister of Rajasthan. The country, in genral and Northern Inida in particular has subffered a great loss.

Shri Shankarro Deo, a great Sarovodaya Leade also passed away due to heart aliment on 30th December, 1974. He was an able leader, seasoned stateman and agreat social reformer. He spent his life in the service of the people.

I fully associate myself with the deep feelings that have been expressed about the passing away of these great personalities and I shall no goubt convey the sympathies of this House to the3 bereaved families. Now I request you to observe one minute's silence while standing as a mark of respect to the deceased.

(At this stage the House stood in silence for a minute as a mark of respect to the memory of the decreased).

नियम 30 के अधीन प्रस्ताव

Home Minister (Sh. K.L. Poswal): Sir, I beg to move—

That rule 30 of the rules of Procedure and Conduct of Business in the Haryana Legislative Assembly be suspended and Government Business be transacted on Thursday, the 2nd January, 1975.

Mr. Speaker: Motion moved—

That rule 30 of the rules of Procedure and Conduct of Business in the Haryana Legislative Assembly be suspended and Government Business be transacted on Thursday, the 2nd January, 1975.

चौधरी राम लाल वधवा: स्पीकर साहब, मेरी अर्ज यह है कि सै ान पहले ही बहुत छोटा है और बहुत सारे इम्पौर्टैंट रैजोल्यू ान्ज के नोटिस आये हुए है और.....

मुख्य मंत्री (चौधरी बंसी लाल): स्पीकर साहब, मैं एक बात कहना चाहूंगा कि कि पिदली बार इनको यह ि ाकायत थी कि नोटिस पूरा नही दिया जाता और भाार्ट नोटिस पर सैशन बुलाया जाता है। अबकी बार उनको 32/33 दिन का नोटिस दिया गया था फिर रैजोल्यू ान लेट क्यों आए। 18/20 दिन का नोटिस तो रैगुलर तौर पर दिया गया था और स्पीकर साहब,

आपको याद होगा कि पिछले सै ान के दौरान बिजनैस एडवाइजरी कमेटी की मीटिंग मे आपके चैंबर मे मैंने इनको कह दिया था कि पहली जनवरी से सै ान होगा तो यह 32/33 दिन का नोटिस थां फिर भी अगर यह वक्त पर न भेजें तो हमारा क्या कसूर है ?

चौधरी राम लाल वधवाः इसमे आप यह देंखे कि प्रोरोग होने का नोटिस कब आया। प्रोरोगे ान के नोटिस के बाद ही भेज सकते थे और यह नोटिस 16 तारीक्ष को पहुंचा है। मेरी अर्ज है कि इस नोन आफि ायल डे को आफी ायल करने की क्या जरूरत है, जबकि इतने इम्पोटेंट रैजोल्यू ान्ज आए हुए है और..... ...

श्री अध्यक्षः न तो कोई बिल ही है और न ही कोई रैजोल्यू ान बैल्ट हुआ है इसलिये कोने नान आफि ायल बिजनैस ही नही है।

चौधरी राम लाल वधवाः मैंने पांच रैजोल्यू ान्ज भेजे हुए है।

श्री अध्यक्षः बैल्ट नही हुए है।

चौधरी राम लाल वधवाः मेने तो पावर इनको दी हुई है।

श्री अध्यक्षः यह दो तारीख के लिये डयू नही था। आपका रैजोल्यू ान नैक्सट बीक मे आयेगा।

श्रीमती चन्द्रावतीः जनाब यह सीट इस मेज के बहुत दूर पड़ती है, तो जब आगे है तो थोड़ी नजदीक करवा दीजिए, काफी दूर पड़ती है। जनाब, यह मैं आपके ध्यान मे लाना चाह रही थी.....

श्री अध्यक्षः बहन जी, आप अपनी पार्टी के लीडर से पूछ ले।

श्रीमती चन्द्रावतीः जनाब, यह तो दूर पड़ती है मेरे मेज से इसलिये आपका ध्यान दिलाया है.....

Mr. Speaker: Order please.

Quesiton is—

That rule 30 of the rules of Procedure and Conduct of Business in the Haryana Legislative Assembly be suspended and Government Business be transacted on Thursday, the 2nd January, 1975.

The motion was carried.

सदन के मेज पर रखे जाने वाले कागज पत्र

State Minister for Irrigation and Power (Sardar Harmohinder Singh Chatta): Sir,

I beg to lay on the Table the Housing Department noticfication No. GSR. 110/H.A. 20/71/S. 73/amd. (1)/74, dated the 6th September, 1974, regarding the Houseing Board, Haryana (Conditions of Service of the Chairmen and Members) First Amendemnt Rules 1974, as required under Section 73(3) of the Haryana Housing Board Act, 1971.

I beg to lay on the Table the Housing Department noticfication No. GSR. 125/H.R. 20/71/S.73/74, dated the 11th October, 1974, regarding the Houseing Board, Haryana (Borrowing of loans) First Amendemnt Rules 1974, as required under Section 73(3) of the Haryana Housing Board Act, 1971.

I beg to lay on the Table the Transport Department noticfication No. GSR. 144/C.A. 4/39/S. 21/amd. (4)/74, dated the 15th November, 1974, regarding the Punjab Motor Vehicles (Haryana Fourth Amendment) Rules 1974, as required under Section 133(3) of the Motor Vehicles Act, 1939.

सदन के मेज पुनः रखे जाने वाले कागज पत्र

State Minister for Irrigation and Power (Sardar Harmohinder Singh Chatta): Sir,

I beg to lay on the Table a copy each the following notificaitons regarding the amendments in the Motor Vehicle Rules, 1940, as required uner section 133(3) of the Vehicle Act, 1939:-

(i) No. GSR. 103/C.A.4/39/S. 41/amd. (2)/74, dated the 16th August, 1974

(ii) No. GSR. 111/C.A.4/39/S. 91/74, dated the 20th September, 1974

I beg to lay on the Table a copy of the Co-operation Department noticfication No. GSR. 131/P.A.25/61/S. 85/amd. (1) 74, dated the 31st October, 1974, regarding the Punjab Co-operative Societies (Haryana first Amendment) Rules 1974, as required under Section 85(3) of the Punjab Co-operative Societies Act, 1961.

I beg to lay on the Table a copy of the Genral Administration Department noticfication No. GSR. 142/Art. 320/amd. II/74, dated the 15th November, 1974, regarding the Amendments in the Haryana Public Service Commission (Limitaiton of Functions) Regulations, 1973, as required under article 320(5) of the Constitution of India.

Mr. Speaker: The House stands ajourned till 2.00 p.m. tomorrow.

15.35 बजे

(The Sabha then ajnourned till 2.00 p.m. on Thursday, the 2nd January, 1975).